पुस्तक समीक्षा - भारतीय विद्या सार

Book Review - Essence of Indian Knowledge Tradition

- डॉ ओऽम प्रकाश शर्मा
Dr. Oum Prakash Sharma
Director, National Center for Innovation in Distance Education,
IGNOU (Indira Gandhi National Open University), New Delhi
oumsharma@ignou.ac.in

AICTE ने मॉडल पाठ्यक्रम (List of Model curricular) में 'Essence of Indian Knowledge Tradition' विषय को एच्छिक (Elective) क्रेडिट कोर्स की श्रेणी में रखा है । इस नए विषय पर पाठ्य सामग्री के लिए भारतीय विद्या भवन, दिल्ली केंद्र ने दो पुस्तकें - भारतीय विद्या सार-1 एवं भारतीय विद्या सार-2 तैयार की हैं ।

इन पुस्तकों की विशेषता है कि इनमें सभी अध्याय (chapters) विषय विशेषज्ञों के द्वारा सुबोध हिंदी में लिखे गए हैं । जिन्हें समझने में आसानी हो, इसलिए भाव समतुल्य अंग्रेजी के शब्दों को भी दिया गया है । इसमें अध्यायों का सार संक्षेप, शीर्षक और की-वर्ड (विषय बोध शब्द) हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी दिए गए हैं जिससे वेब पर सर्च करने पर यह जानकारी मिल सके ।

व्यावहारिक प्रयोग की दृष्टि से case studies (आख्यायिकाएँ) भी दी गई हैं :-

'भारतीय विद्या सार' AICTE द्वारा पारित 'Choice Based Credit System' के अंतर्गत रुचि-अनुकूल पाठ्यक्रम है। इसे तकनीकी शिक्षा में विद्यार्थियों को कौशल प्रधानता के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परंपरा से परिचित करवाने हेतु बनाया गया है। इसमें सन्निहित ज्ञान के अध्ययन से कोई भी व्यक्ति जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परंपरा का लाभ उठा कर नवोन्मेष एवं नवीन वैज्ञानिक सृजन की ओर आगे बढ़ सकता है । इस प्रकार भारतीय युवा पीढ़ी देश को उन्नति की ओर अग्रसर करने में योगदान कर सकती हैं एवं वह अपनी धरोहर के प्रति गर्व की अनुभूति कर सम्मानित हो सकती है ।

'भारतीय विद्या सार-1' के प्रथम अध्याय में चार वैदिक सांहिताएँ, छः वेदांग, चार उपवेद तथा चार अन्य विद्याओं का विश्लेषण किया गया है । इनमें वैदिक वैश्विक दृष्टिकोण, भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक प्रगति का सुंदर समंवय है ।

द्वितीय अध्याय आधुनिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित है । इसमें भारतीय विज्ञान परंपरा और आधुनिक परिपेक्ष्य में ऋषियों के विज्ञान-चिंतन की अनुकूलता का विश्लेषण किया गया है। आधुनिक भौतिक विज्ञानी भी चेतन सत्ता (consciousness) को स्वीकारने लगे हैं । भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत भौतिकी (विद्युत, विमान, शास्त्र, और नौका शास्त्र आदि), रसायनशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, खगोलशास्त्र और गणित का वर्णन है । वैदिक गणित का भी संक्षिप्त परिचय दिया गया है । वैदिक गणित से गणना में शामिल संख्याओं के समायोजन पैटर्न के आधार पर तीव्र कलन विधि (फास्ट एल्गोरिदम्) का परिचय मिलता है। इनसे बहुत कम समय में गणना सम्भव है। इसके अभ्यास से नवाचार कौशल (Innovation skills) के विकास में भी मदद मिलती है।

तृतीय अध्याय 'योग और समग्र स्वास्थ्य' के अंतर्गत 'स्वस्थ तन व प्रसन्न मन', 'सर्वांगीण स्वास्थ्य'

'आहार शुद्धि' आदि विषय दिए गए हैं । त्रिदोष- संतुलन तथा त्रिविध आहार से मानव के निरोग होने की चर्चा है। शुद्धि के लिए हितभुक्, मितभुक्, ऋतभुक् का निर्देश दिया गया है ।

'भारतीय विद्या सार-2' में भारतीय दर्शन, भाषाशास्त्र और कला परंपरा का विस्तृत वर्णन है। इसमें भी तीन अध्याय है – प्रथम अध्याय सर्वदर्शन है जिसमें भारत की ज्ञान परंपरा के मुख्य षटदर्शन, और बोद्ध जैन चार्वाक का वर्णन है। इनमें वह सूक्ष्म चिंतन समाहित है जो प्राचीन काल में विद्वान- मनीषियों ने स्वानुभूति के आधार पर अलग-अलग ढंग से परमाणु से ब्रह्मांड तक विश्व की सृष्टि, स्थिति एवं प्रलीन कर्मों को प्रस्तुत किया। इनमें आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक स्तरों पर सभी पदार्थों के तत्वज्ञान तथा जीवन के कर्तव्यों और अकर्तव्यों के माध्यम से उसे सुंदर बनाने का दर्शन, विज्ञान, जन्म, कर्म एवं मोक्ष, दुखों से निवृत्ति आदि अनेक विषयों पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में भारतीय भाषाशास्त्र का विवरण प्रस्तुत है। इसमें संस्कृत भाषा की ध्वनियां, उसके शब्द, उनके अर्थ एवं शब्दों से बनने वाले वाक्यों का एक वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत है। इसके माध्यम से व्यक्ति ध्वनियों के सम्यक् उच्चारण, उनके श्रवण के सिद्धांतों, पदों के विभागों एवं प्रकारों, व्याकरण की कोटि में तथा शब्द शक्तियों के परिचित होकर अन्य किसी भाषा को सीखने में अधिक कौशल हो सकता है । संस्कृत साहित्य में वैदिक एवं पौराणिक, गद्य एवं पद्य, विज्ञान एवं पर्यावरण, नारी चेतना एवं जीवन के प्रति उदात्त दृष्टिकोण आदि विषयों के साथ-साथ विश्व-बंधुत्व, इतिहास, कलाएं, युद्धविद्या भाषा विज्ञान एवं अनेक विषयों पर चर्चा प्रस्तुत की गई है ।

तृतीय अध्याय में संगीत, नृत्य, नाट्य, मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तु तथा साहित्य सभी का समावेश किया गया है । इस अध्याय में इन कलाओं की उत्पत्ति एवं विभिन्न युगों में भिन्न-भिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के चलते अनेक प्रकार की शैलियों के विकास का विवरण है । ये कलाएं मनोरंजन के साथ-साथ जीवन के भिन्न- भिन्न उद्देश्यों की पूर्ति तथा व्यक्ति को मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास में सहायक हो ।

इसे Choice Based Credit System के अंतर्गत सभी तकनीकी विभागों के विद्यार्थी ले सकते हैं । तकनीकी शिक्षा में ग्रैजुएट भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परंपरा को जान सकेंगे और अनुसंधान के नए द्वार खोल सकेंगे ।

ये पुस्तकें पठनीय हैं, सुबोघ और संग्रहणीय हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा की बेसिक जानकारी शिक्षा-परीक्षा के हर स्तर पर अपेक्षित है। विज्ञान, इंजीनियरिंग, मेडीकल, प्रबंधन, न्याय और कला संकाय के सभी विषयों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षण पाठ्यक्रमों में, सिविल सर्विसेज की ट्रेनिंग में और स्कूलों में संक्षिप्त सटीक जानकारी देने के लिए भारतीय विद्या सार-1 और 2 बहुत उपयोगी होंगे।

संपादन- शशिबाला, ओम विकास, अशोक प्रधान

प्रकाशक – भारतीय विद्या भवन,
कुलपति के. एम. मुंशी मार्ग, मुम्बई- 400007
पुस्तकें प्राप्त करने हेतु संपक करें :- कमरा न. 20, भारतीय विद्या भवन, कस्तूरबा गाँधी मार्ग,
नई दिल्ली- 110001, दूरभाष – 011-23382002, 01123382470
ईमेल: sunitgulati@yahoo.com,
वेबसाईट – www.bvbdelhi.org